Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Truth and validity

तर्कवाक्यों को सत्य या असत्य कहा जाता है युक्तियाँ सत्य या असत्य नहीं होती, वे वैध या अवैध होती है। युक्तियों की वैधता या अवैधता तथा तर्कवाक्यों की सत्यता या असत्यता के बीच सम्बन्ध है, लेकिन यह उतना सरल नहीं है।

कुछ ऐसी वैध युक्तियाँ होती हैं, जिनमें सिर्फ सत्य असत्य वाक्य होते हैं। उदाहरण के लिए -

All bats are mammals.
All mammals have lungs.
Therefore, all bats have lungs.

यह युक्ति ऐसी भी हो सकती है जो वैध है, लेकिन उसमें प्रयुक्त सभी वाक्य असत्य हैं। उदाहरण के लिए —

All trout are mammals.
All mammals have wings.
Therefore, all trout have wings.

यह युक्ति वैध है क्योंकि यदि इसके आधार वाक्य को सत्य मान लिया जाता है तो इसके निष्कर्ष को भी सत्य मानना होगा। यद्यपि कि वे वास्तव में असत्य है। उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि यद्यपि कि कुछ वैध युक्तियों के निष्कर्ष सत्य होते हैं, सभी युक्तियों के निष्कर्ष सत्य नहीं होते अर्थात् युक्तियों की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता को निर्धारित नहीं करती।

ऐसा भी सम्भव है कि आधार वाक्य सत्य हैं और निष्कर्ष सत्य हो फिर भी युक्ति अवैध रहती है उदाहरण के लिए —

Scanned with CamScanner

If I am President, Then I am famous.

I am not President.

Therefore, I am not famous.

तर्कशास्त्रियों का विचार है कि एक युक्ति को दो शर्तों की पूर्ति करनी पड़ती है जबकि उसके निष्कर्ष की सत्यता स्थापित करनी होती है। सर्वप्रथम इसे वैध होना पड़ता है और इसके सभी आधार वाक्यों को सत्य होना होता है। जहाँ तक आधार वाक्यों की सत्यता या असत्यता निर्धारित होने का प्रश्न है, यह वैज्ञानिक अध्ययन का विषय है, क्योंकि आधार वाक्य किसी भी विषय वस्तु के विषय में हो सकता है। युक्तियों की वैधता या अवैधता का निर्धारण करना निगमनात्मक तर्क का विषय है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सत्यता या असत्यता आधार वाक्यों या तर्कवाक्यों के गुण हैं जबकि वैधता या अवैधता युक्तियों के गुण माने जाते हैं। हमने देखा कि युक्तियों की वैधता और उसमें प्रयुक्त तर्कवाक्यों की सत्यता या असत्यता के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

X ——— X

Scanned with CamScanner